विभाग 3 : विशेष अध्ययन : अंक 10

कृति 3 (अ) पद्यांश लगभग 8 से 12 पंक्तियों में **06**

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(आ) लघूत्तरी – उत्तर 80 से 100 शब्दों में (दो में से एक) **04**

विशेष अध्ययन (१० अंक)

ध्यान दें : ये कृतियाँ पाठ्यपुस्तक के 'विशेष अध्ययन हेतु काव्य पर आधारित हैं। प्रश्न ३ (अ) ६ अंक तथा प्रश्न ३ (आ) ४ अंक का होगा।

अपेक्षित प्रश्नसंग्रह 7

पद्यांश कृति

[प्रश्न ३ (अ) : कुल अंक ६]

प्रश्न ३ (अ) में कृति १ आकलन पर आधारित होंगी, कृति २ शब्द संपदा पर तथा कृति ३ (अ) अभिव्यक्ति पर आधारित होगी। प्रत्येक कृति के लिए २ अंक। कुल ६ अंक।

कृतिपत्रिका के प्रश्न ३ (अ) के लिए

पद्यांश क्र. १

प्रश्न. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. १ : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७३)

नीचे की घाटी से
ऊपर के शिखरों पर
जिसको जाना था वह चला गया –
हाय मुझी पर पग रख
मेरी बाहों से
इतिहास तुम्हें ले गया।
सुनो कनु, सुनो

क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
लीलाभूमि और युद्ध क्षेत्र के
अलंघ्य अंतराल में।
अब इन सूने शिखरों, मृत्यु घाटियों में बने
सोने के पतले गुँथे तारोंवाले पुल-सा निर्जन
निरर्थक
काँपता-सा, यहाँ छूट गया – मेरा यह सेतु जिस्म
– जिसको जाना था वह चला गया

कृति १ : (आकलन)

- **संजाल पूर्ण कीजिए : *(मार्च '२२)***

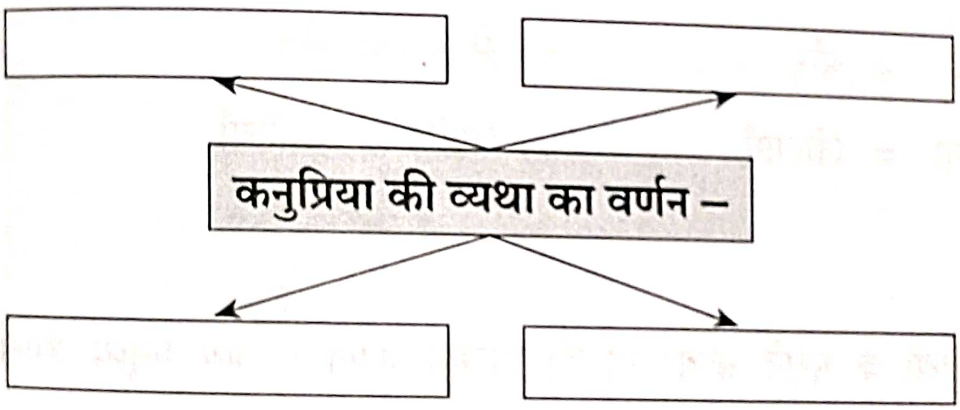

कृति २ : (शब्द संपदा)

- **पद्यांश में आए हुए निम्न शब्दों का वचन परिवर्तन कीजिए : *(मार्च '२२)***

(१) बाँह = ---------- (२) सेतु = ----------

(३) लीला = ---------- (४) घाटी = ----------

कृति ३ : (अभिव्यक्ति)

- **'वृक्ष की उपयोगिता' विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए। *(मार्च '२२)***

क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
लीलाभूमि और युद्ध क्षेत्र के
अलंघ्य अंतराल में।
अब इन सूने शिखरों, मृत्यु घाटियों में बने
सोने के पतले गुँथे तारोंवाले पुल-सा निर्जन
निरर्थक
काँपता-सा, यहाँ छूट गया – मेरा यह सेतु जिस्म
– जिसको जाना था वह चला गया

कृति १ : (आकलन)

- **संजाल पूर्ण कीजिए : *(मार्च '२२)***

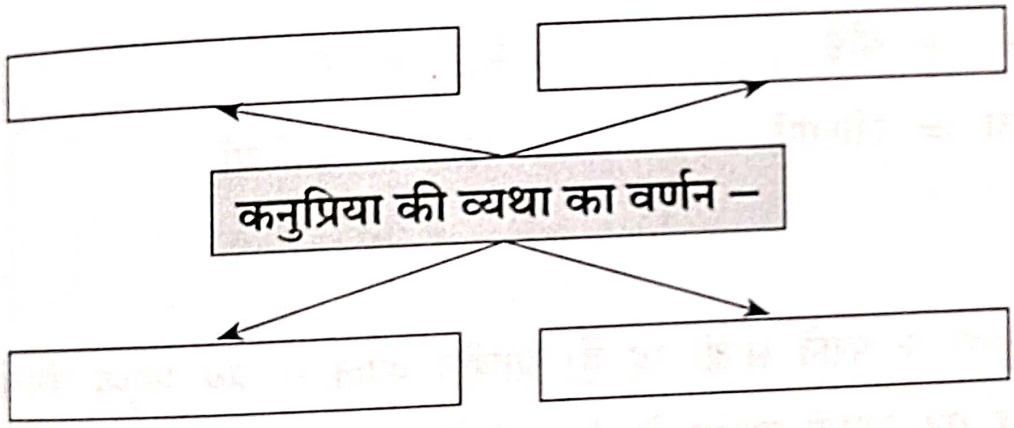

कृति २ : (शब्द संपदा)

- **पद्यांश में आए हुए निम्न शब्दों का वचन परिवर्तन कीजिए : *(मार्च '२२)***

(१) बाँह = ---------- (२) सेतु = ----------

(३) लीला = ---------- (४) घाटी = ----------

कृति ३ : (अभिव्यक्ति)

- **'वृक्ष की उपयोगिता' विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए। *(मार्च '२२)***

क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
लीलाभूमि और युद्ध क्षेत्र के
अलंघ्य अंतराल में।
अब इन सूने शिखरों, मृत्यु घाटियों में बने
सोने के पतले गुँथे तारोंवाले पुल-सा निर्जन
निरर्थक
काँपता-सा, यहाँ छूट गया – मेरा यह सेतु जिस्म
– जिसको जाना था वह चला गया

कृति १ : (आकलन)

- **संजाल पूर्ण कीजिए : *(मार्च '२२)***

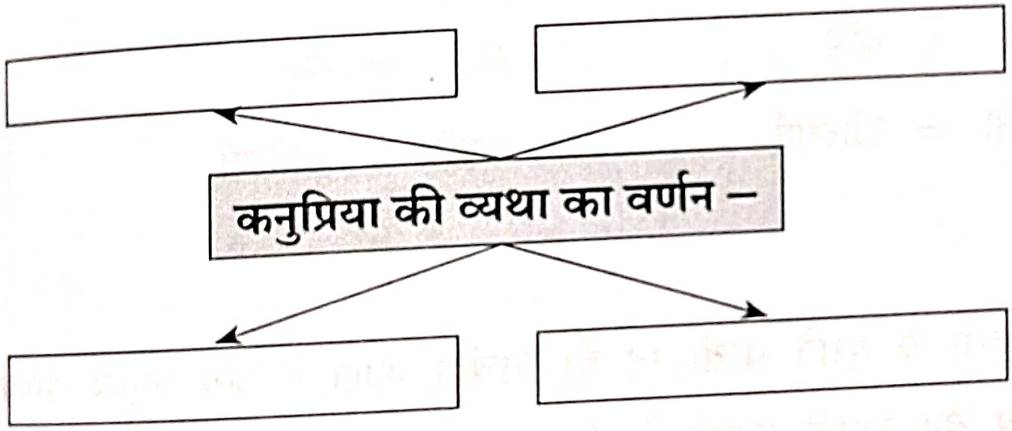

कृति २ : (शब्द संपदा)

- **पद्यांश में आए हुए निम्न शब्दों का वचन परिवर्तन कीजिए : *(मार्च '२२)***

(१) बाँह = ---------- (२) सेतु = ----------

(३) लीला = ---------- (४) घाटी = ----------

कृति ३ : (अभिव्यक्ति)

- **'वृक्ष की उपयोगिता' विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए। *(मार्च '२२)***

उत्तर

कृति १ :

कनुप्रिया की व्यथा का वर्णन –

- मुझ पर पैर रख कर चला गया
- मैं सिर्फ सेतु थी
- जिसको जाना था वह चला गया
- कनु के बिना मेरा जीवन निरर्थक

कृति २ :

(१) बाँह = बाँहें (२) सेतु = सेतु

(३) लीला = लीलाएँ (४) घाटी = घाटियाँ

कृति ३ :

वृक्ष मनुष्यों के पुराने साथी रहे हैं। प्राचीन काल में जब मनुष्य जंगलों में रह करता था, तब वह अपनी सुरक्षा के लिए पेड़ों पर अपना घर बनाता था। पेड़ों से प्राप्त फल-फूल और जड़ों पर उसका जीवन आधारित था। पेड़ों की छाया धूप और वर्षा से उसकी मदद करती है। पेड़ों की हरियाली मनुष्य का मन प्रसन्न करती है। अब भी मनुष्य जहाँ रहता है, अपने आसपास फलदार और छायादार वृक्ष लगाता है। वृक्ष मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। अनेक औषधीय वृक्षों से मनुष्यों को औषधियाँ मिलती हैं। वृक्ष वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड सोखते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे हमें साँस लेने के लिए शुद्ध वायु मिलती है। पेड़ों का सबसे बड़ा फायदा वर्षा कराने में होता है। जहाँ पेड़ों की बहुतायत होती है, वहाँ अच्छी वर्षा होती है। पेड़ों से ही फर्नीचर बनाने वाली तथा इमारती लकड़ियाँ मिलती हैं। इस तरह पेड़ हमारे लिए हर दृष्टि से उपयोगी होते हैं।

उत्तर

कृति १ :

कनुप्रिया की व्यथा का वर्णन –

- मुझ पर पैर रख कर चला गया
- मैं सिर्फ सेतु थी
- जिसको जाना था वह चला गया
- कनु के बिना मेरा जीवन निरर्थक

कृति २ :

(१) बाँह = बाँहें (२) सेतु = सेतु

(३) लीला = लीलाएँ (४) घाटी = घाटियाँ

कृति ३ :

वृक्ष मनुष्यों के पुराने साथी रहे हैं। प्राचीन काल में जब मनुष्य जंगलों में करता था, तब वह अपनी सुरक्षा के लिए पेड़ों पर अपना घर बनाता था। पेड़ों प्राप्त फल-फूल और जड़ों पर उसका जीवन आधारित था। पेड़ों की छाया धूप अ वर्षा से उसकी मदद करती है। पेड़ों की हरियाली मनुष्य का मन प्रसन्न करती है। अ भी मनुष्य जहाँ रहता है, अपने आसपास फलदार और छायादार वृक्ष लगाता है। वृ मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। अनेक औषधीय वृक्षों से मनुष्यों को औषधि मिलती हैं। वृक्ष वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड सोखते हैं और ऑक्सीजन छोड़ हैं, जिससे हमें साँस लेने के लिए शुद्ध वायु मिलती है। पेड़ों का सबसे बड़ा फाय वर्षा कराने में होता है। जहाँ पेड़ों की बहुतायत होती है, वहाँ अच्छी वर्षा होती है पेड़ों से ही फर्नीचर बनाने वाली तथा इमारती लकड़ियाँ मिलती हैं। इस तरह पेड़ हमा लिए हर दृष्टि से उपयोगी होते हैं।

पद्यांश क्र. २

प्रश्न. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश २ : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७६ – ७७)

में इन्हें सुनकर कुछ भी नहीं पाती प्रिय
सिर्फ राह में ठिठककर
तुम्हारे उन अधरों की कल्पना करती हूँ
जिनसे तुमने ये शब्द पहली बार कहे होंगे
मैं कल्पना करती हूँ कि
अर्जुन की जगह मैं हूँ
और मेरे मन में मोह उत्पन्न हो गया है
और मैं नहीं जानती कि युद्ध कौन-सा है
और मैं किसके पक्ष में हूँ
और समस्या क्या है
और लड़ाई किस बात की है
लेकिन मेरे मन में मोह उत्पन्न हो गया है

कृति १ : (आकलन)

- **आकृति पूर्ण कीजिए :** *(सितंबर '२१)*

कनुप्रिया युद्ध के बारे में यह नहीं जानती है–
→ (i) _____
→ (ii) _____
→ (iii) _____
→ (iv) _____

कृति २ : (शब्द संपदा)

- **निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में प्रयुक्त समानार्थी शब्द ढूँढ़कर लिखिए :** *(सितंबर '२१)*

(१) युद्ध –

(२) प्यारा –

(३) चित्त –

(४) पथ –

कृति ३ : (अभिव्यक्ति)

- 'स्त्री-पुरुष समानता' के बारे में ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए।

(सितंबर '२१)

उत्तर

कृति १ :

कनुप्रिया युद्ध के बारे में यह नहीं जानती है–

(i) युद्ध कौन-सा है

(ii) किसके पक्ष में है

(iii) समस्या क्या है

(iv) लड़ाई किस बात की है

कृति २ :

(१) युद्ध → लड़ाई

(२) प्यारा → प्रिय

(३) चित्त → मन

(४) पथ → राह

कृति ३ :

हमारे यहाँ स्त्री-पुरुष को रथ के दो पहियों की संज्ञा दी जाती है। रथ के दोनों पहियों को समान रखने की बात ही कोई स्वीकार करता है, पर नारी को पुरुष के समान मानने के लिए कुछ लोग तैयार नहीं होते। इसी मान्यता के परिणामस्वरूप अनेक

वर्षों से नारी के साथ अन्याय होता आ रहा है। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने से वंचित कर दिया और परदे में रखा जाने लगा। इसलिए वह पुरुषों से बहुत पीछे रह गई। पर आजादी के बाद नारी के स्थिति में काफी सुधार हुआ है। अब वह हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम कर रही है। वह कई मानों में आत्मनिर्भर हो गई है। वह अपने अधिकारों और अस्मिता की बात सोचने लगी है। वह शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, सुरक्षा, खेल, न्यायप्रक्रिया, व्यवसाय, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, बैंकिंग आदि सभी क्षेत्रों में उच्च पदों पर कार्य कर रही है। यह समाज और देश के लिए शुभ लक्षण है। अब उसके लिए विकास का हर क्षेत्र खुला हुआ है।

पद्यांश क्र. ३

प्रश्न. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. ३ : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७७)

क्योंकि तुम्हारे द्वारा समझाया जाना
मुझे बहुत अच्छा लगता है
और सेनाएँ स्तब्ध खड़ी हैं
और इतिहास स्थगित हो गया है
और तुम मुझे समझा रहे हो.....
कर्म, स्वधर्म, निर्णय, दायित्व,
शब्द, शब्द, शब्द, ...
मेरे लिए नितांत अर्थहीन हैं-
मैं इन सबके परे अपलक तुम्हें देख रही हूँ
हर शब्द को अँजुरी बनाकर
बूँद-बूँद तुम्हें पी रही हूँ
और तुम्हारा तेज
मेरे जिस्म के एक-एक मूर्च्छित संवेदन को
धधका रहा है

और तुम्हारे जादू भरे होंठों से
रजनीगंधा के फूलों की तरह टप-टप शब्द झर रहे हैं
एक के बाद एक के बाद एक.....
कर्म, स्वधर्म, निर्णय, दायित्व.....
मुझ तक आते-आते सब बदल गए हैं
मुझे सुन पड़ता है केवल
राधन, राधन, राधन।

पद्यांश क्र. ३

कृति १ : (आकलन)

- **आकृति पूर्ण कीजिए : *(जुलाई '२२)***

कनुप्रिया के लिए कनु के अर्थहीन शब्द –

कृति २ : (शब्द संपदा) *(जुलाई '२२)*

- **उपर्युक्त पद्यांश में आए हुए शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए :**

(१) ----------

(२) ----------

(३) ----------

(४) ----------

कृति ३ : (अभिव्यक्ति)

- **व्यक्ति को कर्म प्रधान होना चाहिए' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपना मत लिखिए। *(जुलाई '२२)***

उत्तर

कृति १ :

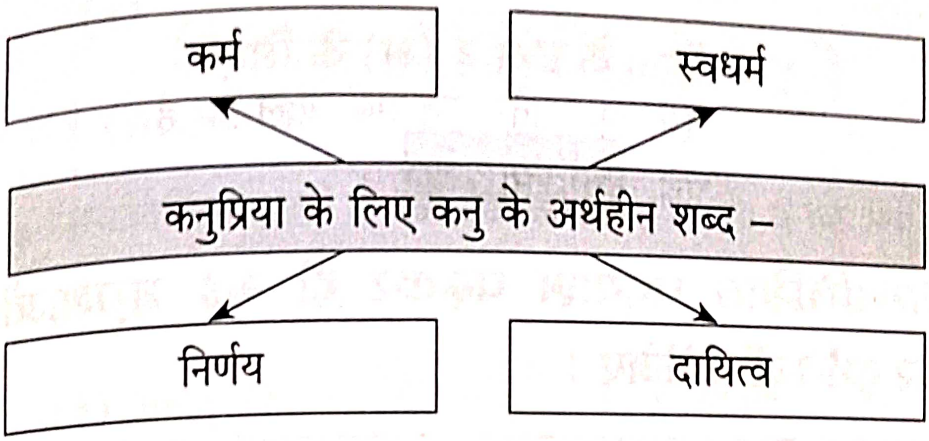

कृति २ :

(१) बूँद – बूँद (२) एक – एक (३) टप – टप (४) आते – आते।

कृति ३ : (अभिव्यक्ति)

संसार में दो तरह के लोग होते हैं। एक कर्म करने वाले लोग और दूसरे भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले लोग। बड़े-बड़े महापुरुष, वैज्ञानिक, उद्योगपति, शिक्षाविद, देश के कर्णधार तथा बड़े-बड़े अधिकारी अपने कार्यों के बल पर ही महान कहलाए। कर्म करने वाले व्यक्ति ही अपने परिश्रम के फल की उम्मीद कर सकते हैं। हाथ पर हाथ रखकर भगवान के भरोसे बैठे रहने वालों का कोई काम पूरा नहीं होता। निष्क्रिय बैठे रहने वाले लोग भूल जाते हैं कि भाग्य भी संचित कर्मों का फल ही होता है। किसान को अपने खेत में काम करने के बाद ही अन्न की प्राप्ति होती है। व्यापारी को बौद्धिक श्रम करने के बाद ही व्यवसाय में लाभ होता है। कहा भी गया है कि 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करे सो तस फल चाखा।' इस प्रकार कर्म सफलता की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

अपेक्षित प्रश्नसंग्रह 8

लघूत्तरी प्रश्न (विशेष अध्ययन पाठ)

[प्रश्न ३ (आ) : कुल अंक ४]

प्रश्न ३ (आ) पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न होगा। इसमें दो प्रश्न दिए जाएँगे। विद्यार्थियों को इनमें से किसी एक प्रश्न का ८० से १०० शब्दों में उत्तर लिखना होगा। इसके लिए ४ अंक है।

कृतिपत्रिका के प्रश्न ३ (आ) के लिए

प्रश्न. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर ८० से १०० शब्दों में लिखिए।

(१) राधा की दृष्टि से जीवन की सार्थकता बताइए।

(सितंबर '२१; मार्च '२२; जुलाई '२२)

उत्तर : राधा के लिए जीवन में प्यार सर्वोपरि है। वह वैरभाव अथवा युद्ध को निरर्थक मानती है। कृष्ण के प्रति राधा का प्यार निश्छल और निर्मल है। राधा ने सहज जीवन जीया है और उसने चरम तन्मयता के क्षणों में डूबकर जीवन की सार्थकता पाई है। अतः वह जीवन की समस्त घटनाओं और व्यक्तियों को केवल प्यार की कसौटी पर ही कसती है। वह तन्मयता के क्षणों में अपने सखा कृष्ण की सभी लीलाओं का अनुमान करती है। वह केवल प्यार को सार्थक तथा अन्य सभी बातों को निरर्थक मानती है। महाभारत के युद्ध के महानायक कृष्ण को संबोधित करते हुए वह कहती है कि मैं तो तुम्हारी वही बावरी सखी हूँ, तुम्हारी मित्र हूँ। मैंने तुमसे सदा स्नेह ही पाया है और मैं स्नेह की ही भाषा समझती हूँ।

राधा कृष्ण के कर्म, स्वधर्म, निर्णय तथा दायित्व जैसे शब्दों को सुनकर कुछ नहीं समझ पाती। वह राह में रुक कर कृष्ण के अधरों की कल्पना करती है... जिन अधरों से उन्होंने प्रणय के शब्द पहली बार उससे कहे थे। उसे इन शब्दों में केवल अपना ही राधन्... राधन्... राधन्... नाम सुनाई देता है।

इस प्रकार राधा की दृष्टि से जीवन की सार्थकता प्रेम की पराकाष्ठा में है। उसके लिए इसे त्याग कर किसी अन्य का अवलंबन करना नितांत निरर्थक है।

(२) 'कवि ने कनुप्रिया के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्दबद्ध किया है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए। *(मार्च '२२; जुलाई '२२)*

उत्तर : 'कनुप्रिया' काव्य में राधा अपने प्रियतम कृष्ण के 'महाभारत' युद्ध के महानायक के रूप में अपने से दूर चले जाने से व्यथित है। वह इस बात को लेकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करती है। कभी अपनी व्यथा व्यक्त करती है, तो कभी अपने प्रिय की उपलब्धि पर गर्व करके संतोष कर लेती है।

यह व्यथा केवल राधा की ही नहीं है। उन परिवारों के माता-पिता की भी है, जिनके बेटे अपने परिवारों के साथ नौकरी व्यवसाय के सिलसिले में अपनी गृहस्थी के प्रति अपना दायित्व निभाने के लिए अपने माता-पिता से दूर रहते हैं। उनसे विछोह की व्यथा उन्हें भोगनी पड़ती है। भोले माता-पिता को लाख माथा-पच्ची करने पर भी समझ में यह नहीं आता कि सालों-साल तक उनके बेटे माता-पिता को आखिर दर्शन क्यों नहीं देते हैं। पर वहीं उनको यह संतोष और गर्व भी होता है कि उनका बेटा वहाँ बड़े पद पर है, जो उसे उनके साथ रहने पर नसीब नहीं होता। इसी तरह किसी एहसान फ़रामोश के प्रति एहसान करने वाले व्यक्ति के मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओं में भी राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा व्यक्त होती है।

स्वाध्याय (Assignment)

कृतिपत्रिका के प्रश्न ३ (आ) के लिए

- **कनुप्रिया के मन में मोह उत्पन्न होने के कारण लिखिए। *(सितंबर '२१)***

(२) 'कवि ने कनुप्रिया के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्दबद्ध किया है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए। *(मार्च '२२; जुलाई '२२)*

उत्तर : 'कनुप्रिया' काव्य में राधा अपने प्रियतम कृष्ण के 'महाभारत' युद्ध के महानायक के रूप में अपने से दूर चले जाने से व्यथित है। वह इस बात को लेकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करती है। कभी अपनी व्यथा व्यक्त करती है, तो कभी अपने प्रिय की उपलब्धि पर गर्व करके संतोष कर लेती है।

यह व्यथा केवल राधा की ही नहीं है। उन परिवारों के माता-पिता की भी है, जिनके बेटे अपने परिवारों के साथ नौकरी व्यवसाय के सिलसिले में अपनी गृहस्थी के प्रति अपना दायित्व निभाने के लिए अपने माता-पिता से दूर रहते हैं। उनसे विछोह की व्यथा उन्हें भोगनी पड़ती है। भोले माता-पिता को लाख माथा-पच्ची करने पर भी समझ में यह नहीं आता कि सालों-साल तक उनके बेटे माता-पिता को आखिर दर्शन क्यों नहीं देते हैं। पर वहीं उनको यह संतोष और गर्व भी होता है कि उनका बेटा वहाँ बड़े पद पर है, जो उसे उनके साथ रहने पर नसीब नहीं होता। इसी तरह किसी एहसान फरामोश के प्रति एहसान करने वाले व्यक्ति के मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओं में भी राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा व्यक्त होती है।

स्वाध्याय (Assignment)

कृतिपत्रिका के प्रश्न ३ (आ) के लिए

- **कनुप्रिया के मन में मोह उत्पन्न होने के कारण लिखिए।** *(सितंबर '२१)*